INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 8.031 (SJIF 2025)

भारत में महिलाओं की राजनीति में भागीदारी : वर्तमान स्थिति एवं चुनौतियां

(Participation of Women in Politics in India : Current Situation and Challenges)

Dr. Kiran Sharma
Assistant Professor,
GDML Patwari P.G. Girls College,
Shrimadhopur, Sikar (Rajasthan, India)
E-mail: Kiranteenu90@gmail.com

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/02.2025-73231785/IRJHIS2501002

सारांश:

किसी भी राष्ट्र के सर्वांगिण विकास के लिये पुरूषों के समान ही महिलाओं की भी राजनीति में भागीदारी आवश्यक हैं । भारत जैसे देश में तो यह अत्यन्त आवश्यक हो जाता हैं कि महिलाओं को भी राजनीति में पुरूषों के समान ही भागीदारी मिलनी चाहिये। क्योंकि परम्परागत रूप से भारत की राजनीति पुरूष प्रधान रही हैं। हालांकि वर्तमान में महिलाओं की भी राजनीति में भागीदारी बढी हैं। भारत सरकार द्वारा लोकसभा और राज्य की विधानसभाओं में महिलाओं की भागीदारी बढाने के लिये पारित किये गये ''महिला आरक्षण विधेयक २०२३'' से आगामी वर्षों में महिलाओं की राजनीति में भागीदारी अवश्य बढेगी। परन्तु अभी भी अनेक चुनौतीयां हैं जिनसे महिलाओं की राजनीति में भागीदारी सीमित हुई हैं। इन चुनौतीयौं का समाधान होने पर ही महिलाओं की राजनीति में पुरूषों के समान भागीदारी सम्भव हैं।

मुख्य शब्द *: महिला, राजनीति, भागीदारी, प्रतिनिधित्व, चुनौतीयां*

प्रस्तावना :

मनुष्य की प्रकृति में जिज्ञासा की प्रवृति अनवरत चली आई है। शिक्षा के माध्यम से ही जिज्ञासा की पूर्ति संभव है। महिलाऐं समाज का अभिन्न अंग हैं, सृष्टि की जन्मदाता हैं, परिवार की संचालिका हैं। अत: महिलाओं की सुदृढ स्थिति राष्ट्र के विकास के लिए जरूरी आयाम हैं। हम अतीत के पन्नो पर दृष्टिपात करें तो पाऐंगे कि समाज का महत्वपूर्ण अंग राजनीतिक दृष्टि से कहीं न कहीं हाशिऐं पर ही रही हैं। जीवन के राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक क्षेत्र में महिलाऐं पुरूषों के पीछे खड़ी दिखाई देती हैं। अत: समाज में महिला सशक्तिकरण के लिए राजनीतिक क्षेत्र में प्रतिनिधित्व तथा भागीदारी महिलाओं के विकास की दशा और दिशा तय करती हैं।

भारत में महिलाओं की राजनीतिक क्रियाशीलता को देखने से यह ज्ञात होता हैं कि जैसे—जैसे शिक्षा के क्षेत्र में परिर्वतन आया, महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता भी परिवर्तित होती दिखाई देती हैं। वैदिक परम्परा से लेकर आधुनिक काल तक की महिलाओं की स्थिति का अवलोकन किया जाऐ तो प्रारम्भिक वैदिक काल में राजनीतिक सहभागिता के साथ—साथ राजनीतिक नेतृत्व के पद चिन्ह् भी दिखाई देते हैं। २१ वीं सदी में महिलाओं को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ा हैं। इस समय भी भारतीय

राजनीति में विजय लक्ष्मी पंडित, सरोजिनी नायडू, कैप्टन लक्ष्मी सहगल, इंदिरा गांधी, कस्तूरबा गांधी, सोनिया गाँधी, स्वर्गीय सूषमा स्वराज, प्रतिभा पाटिल, मायावती, स्वर्गीय जय ललिता, गिरिजा व्यास आदि महिलाऐं ही राजनीति में अपनी पहचान बना पाई हैं।कुछ महिलाओं ने अवश्य ही राजनीति में अपना परचम फहराया हैं, परन्तु कुछ महिलाओं के दम पर असंख्य महिलाओं को राजनीति में भागीदार नहीं माना जा सकता हैं। महिलाओं के मतदान प्रतिशत में भी कोई चमत्कारिक संख्या बल दिखाई नही देता हैं। १९६२ में हुऐ आम चुनावों में महिलाओं की भागीदारी दर ४६.६५ प्रतिशत थी। जो १९८४ में ५८.६० प्रतिशत हो गई। .इससे स्पष्ट होता है कि तत्कालीन समय में राजनीतिक क्षेत्र में महिला सहयोगिता का स्तर धीरे–धीरे बढ़ता हुआ दिखाई देता है। राजनीतिक सहभागिता का आधार समानता एवं स्वतंत्रता है। महिलाओं द्वारा लिए गए राजनीतिक निर्णय ही राजनीतिक सहभागिता को स्पष्ट नहीं करते बल्कि मतदाता के रूप में अपने अधिकारो को जानना राजनीतिक मुदों पर निर्णय लेने की प्रक्रिया भी महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता तथा राजनीतिक जारूकता को स्पष्ट करती है। महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी व प्रतिनिधित्व को बढ़ाने के लिए २००८ में महिला आरक्षण विधेयक को संसद में प्रस्तुत किया गया था, जो महिला राजनीति की ओर बढ़ते कदमों का संकेत था। यह विधेयक निर्णय निकायों में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ाने वाला एक असाधारण प्रयास था। इस विधेयक के अन्तर्गत संसद और राज्यों की विधानसभाओं में महिलाओं के लिए एक तिहाई आरक्षण प्रदान करने का प्रावधान किया गया था। परन्तु राजनीतिक गतिरोध के कारण यह विधेयक कानून का रूप नही ले सका। महिलाओं का राजनीतिक नेतृत्व २००९ के आम चुनाओं के पश्चात् थोड़ा बहुत बढ़ता हुआ दिखाई देता हैं। १८ वीं लोकसभा में महिला सदस्य संख्या १४ प्रतिशत रही। वहीं १७ वीं लोकसभा में महिला नेतृत्व का ग्राफ अधिक था। इससे स्पष्ट होता है कि महिला प्रतिनिधियों ने मतदाताओं के रूझान तथा निर्णय प्रक्रिया को प्रभावित किया हैं। महिला प्रत्याशियों ने मतदाताओं को भी आकृष्ट करने में अहम भूमिका निभाई है। चुनावों के दौरान मतदान का प्रयोग करना हो या उम्मीदवार के रूप में विजय हासिल करने की उपलब्धि हो, सभी बिन्दुओं में महिलाओं की राजनीतिक जागरूता को ज्ञात किया जा सकता है।

लोकसभा चुनावों में मतदाताओं की अरूचि अधिक देखी जाती है। जबकि विधानसभा चुनावों में मतदाताओं की संख्या में बढोतरी दर्ज होती है। क्योंकि लोकसभा चुनावों में चुनाव क्षेत्र विस्तृत होता हैं, जिसके कारण प्रत्याशी घर–घर सम्पर्क नहीं कर पाते। कुछ ऐसे ही कारणों के बीच २००९ से २०१९ तक के लोकसभा चुनावों में मुख्य भागीदारी महिलाओं की रही हैं। महिलाओं द्वारा बूथ तक पहुंचना ही मतदान के रूझानों में वृद्वि पैदा करता है। चुंकि महिला मतदाता प्रतिशत, पुरूष मतदाता प्रतिशत की तुलना में कम होता हैं, वही पिछले कुछ आम चुनावों पर दृष्टि डाले तो पाऐंगें कि स्त्री–पुरूष मतदाता संख्या में अधिक अन्तर नहीं रहा हैं। वर्ष २००९ के आम चुनावों में जहां पुरूष मतदान ४९.३० प्रतिशत रहा, वही महिला मतदान ४०.४८ प्रतिशत रहा, जो काफी अच्छा प्रदर्शन माना जा सकता है। इसी प्रकार वर्ष २०१४ के आम चुनावों में पुरूष मतदान ६७.३६ प्रतिशत रहा, वहीं महिला मतदान ६१.१७ प्रतिशत रहा, जो सन्तोषाप्रद आंकडा है। वर्ष २००९ तथा २०१४ के आम चुनावों में महिला मतदाताओं के रूझान को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। वर्ष २००९ में पुरूषो से भी अधिक मतदान प्रतिशत आधी आबादी का रहा हैं इससे स्पष्ट है कि धीरे–धीरे महिलाओं की दिलचस्पी राजनीति की ओर बढ़ रही हैं। इसे अच्छा संकेत माना जा सकता हैं।

वर्ष २०१४ के आम चुनावों के आंकडो में अवश्य ही अन्तर देखा जा सकता है किन्तु पुरूषो के मुकाबले महिला मतदाताओं के बीच औसत अन्तराल ठीक स्थिति तक रहा है। वहीं बात करे वर्ष २०१९ और २०२४ के लोकसभा चुनावों की तो उसमें महिलाओं की रूचि राजनीति में अच्छा संकेत देती नजर आती हैं। जहां पुरूष मतदान लगभग ६९.७० प्रतिशत रहा, वहीं महिला मतदान लगभग ६७.०३ प्रतिशत रहा हैं। उल्लेखनीय है कि भारत की राजनीति में पुरूष वर्ग का विशेष अधिकार रहा है। चुनावों में मतदान से लेकर राजनीतिक प्रत्याशी, सक्रियता, सहभागिता, प्रचार, प्रदर्शन आदि क्षेत्रों तक महिलाऐ बहुत कम दिखाई देती है। परन्तु पिछले कुछ वर्षो से ये भ्रान्तियां भी पीछे छूट चूकी है। महिलाओं ने मतदान

आंकडो को बदलते हुऐ मतदान केन्द्र से लेकर प्रत्याशी के रूप में खड़े होने तक अपनी सक्रियता दर्ज करवाई है। इस सुखद बदलाव ने भारत की राजनीति को प्रभावित भी किया है।

हालांकि यह सुखद बदलाव अस्थायी है फिर भी इस बात के पुख्ता संकेत है कि महिलाओं की बढ़ती राजनीतिक दावेदारी उन दलों के लिए चुनौती साबित होगी जो महिलाओ को दोयम दर्जे का मानते थे। इसी कारण कई राजनीति दल भी इस धुरी को तोड़ते हुऐ ''जेंडर गेप'' का प्रयोग करते हुऐ महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी को पुरूषों के बराबर करने का प्रयास कर रहे हैं। सियासी राजनीतिक दल भी एक–दूसरे से स्वयं को बेहतर साबित करने की प्रतिस्पर्धा में जुट गऐ हैं। इन बदलावों के ही परिणामस्वरूप महिलाओं का योगदान भारत के राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में दिन–प्रतिदिन बढ़ रहा है जो कि लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए एक सफल प्रयास हैं। महिलाओं की सक्रियता ने भारतीय राजनीति को एक नया आयाम प्रदान किया है। विगत चुनावों में महिला मतदान प्रतिशत में वृद्वि हुई है। इस वृद्वि में राजनीतिक दलों ने भी अपनी चुनावी रणनीति और घोषणा पत्रों के माध्यम से मुख्य भूमिका निभाई हैं। जिसने महिला–पुरूषों के बीच मतदान के अन्तर को कम करने का प्रयास किया है।

२१वीं सदीं शुरूआत से ही महिलाओं की सदीं रही हैं। इन वर्षो में ही महिलाओं का भारत की आर्थिक व्यवस्था में योगदान बढ़ा है। महिलाओं को शिक्षा से जोड़ने के प्रयासो से ही यह बदलाव दृष्टिगोचर हुआ है। महिलाऐं अपनी स्थिति तथा अपने अधिकारों के प्रति सचेत होने लगी है। वर्तमान समय में भी सरकारों द्वारा महिला उत्थान एवं जागरूकता पैदा करने हेतू अनेक कार्यक्रम व योजनाऐ संचालित की जा रही हैं।

वर्तमान राजनीतिक का ध्येय ''महिला आरक्षण विधेयक २०२३'' में भी स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है इस विधेयक का लक्ष्य लोकसभा तथा राज्य विधानसभाओं में ३३ प्रतिशत महिला आरक्षण लागू करना हैं। इन सब प्रयासों के बावजूद भी राजनीति में वे परिवर्तन दृष्टिगोचर नहीं हो रहे जिन प्रयासों की कल्पना की गई थी।

राजनीति में महिलाओं की भागीदारी के मार्ग की प्रमुख चुनौतियों:

१. घरेलु जिम्मेदारियाँ :– सर्वप्रथम महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता में कमी का प्रमुख कारण घरेलु जिम्मेदारियों को माना जा सकता है। घर, परिवार तथा बच्चों का पालन–पोषण आदि घरेलु जिम्मेदारियों को कारण महिलाऐं अपना अधिक समय परिवार के कार्यों में ही खपा देती है।

२. पितृसत्तात्मक समाज :– भारतीय समाज की प्रवृति पितृसत्तात्मक रही है। जिसके कारण भी महिलाऐं राजनीति से दूर रहती है। भारत की राजनीति में महिलाओं की भागीदारी कम होने के पीछे अब तक समाज में पितृसतात्मक ढांचे का मौजुद होना है। यह न सिर्फ महिलाओ को राजनीति में आने से रोकता है बल्कि राजनीति में बाधक तत्व का भी काम करता है। लेकिन राजनीतिक दलों द्वारा ''जेण्डर–गैप'' कार्ड का प्रयोग करने से ही यह वर्तमान राजनीति में बदलाव आया है। ऐसे में यह अनिवार्य हो जाता है कि चुनावों के विभिन्न स्तरों पर महिलाओं की भागीदारी का विश्लेषण किया जाऐ ताकि यह पता लगाया जा सकें कि स्वतंत्रता के इतने वर्षो बाद भी असमानता क्यों बनी हुई है।

३. सामाजिक – आर्थिक कारण:– महिलाओं की राजनीति में सहभागिता की कमी का एक कारण सामाजिक – आर्थिक पिछड़ापन भी है। सामाजिक स्थिति तथा आर्थिक संसाधनों के अभाव के कारण भी महिलाऐं राजनीति में सक्रिय नहीं रह पाती हैं।

४.व्यक्तिगत अरूचि :– अधिकांश महिलाओं को राजनीतिक क्षेत्र में अरूचि होती है तथा राजनीतिक जागरूता की कमी के कारण भी इनकी राजनीति के प्रति उदासीन रहती है।

५. राजनीतिक दलों की उदासीनता :– राजनीतिक दलों की उदासीनता के कारण महिला उम्मीदवारों को टिकट वितरण के समय अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। जो महिलाऐं प्रत्याशी के रूप में जीत दर्ज करवाती है उन्हें अक्सर राजनीतिक दलों द्वारा नीति निर्णय की भूमिका से दूर रखा जाता है। सामान्यत: उन्हे ''महिला मुदो'' से सम्बन्धित कार्य सौंप कर दलों द्वारा इति श्री कर ली जाती है।

विधायी निकायों में महिलाओं के लिए सकारात्मक दिशा में काम किया जाना इस समय की आवश्यकता है। इसके लिए महिलाओं की चुनावी प्रक्रिया में बाधक बनने वाली चीजों को दूर किए जाने की आवश्यकता हैं। इसके साथ ही चुनावी प्रक्रिया को लैंगिक भागीदारी वाला बनाने की भी आवश्यकता है।

६.राजनीति की नकारात्मक छवि :— राजनीति में आरोप — प्रत्यारोपों के चलते महिलाओं की मानसिकता राजनीति से दूर रहने की बन जाती है।

७. सांस्कृतिक प्रतिबंध :— महिलाओं के लिए भारतीय सांस्कृतिक क्षेत्र का ताना—बाना भी इन्हें राजनीति से दूर रखने पर बल देता हैं। इस प्रकार अनेक ऐसे कारण हैं जो महिलाओं की राजनीतिक सक्रिय सहभागिता के समक्ष चुनौतिया उत्पन्न करते है। चुनावों में महिलाओं को टिकट न देने की नीति न सिर्फ राष्ट्रीय दलो की रही है बल्कि क्षेत्रीय दल भी यही नीति अपनाते है। इसके कारण महिलाओं की चुनावों में जीतने की क्षमता कम हो जाती हैं, जो चुनावों में सबसे महत्वपूर्ण होती है।

निष्कर्ष:

भारत में महिला आरक्षण विधेयक तथा निर्णय निकायों में महिला भागीदारी को सुनिश्चित करने की यात्रा अभी भी समाप्त नहीं हुई हैं। राजनीतिक सहभागिता की सफलता के लिए प्रभावी क्रियान्वयन, सामाजिक परिर्वतन व लैंगिक असमानता के व्यापक मुद्दों पर विचार करना भी आवश्यक हैं। जैसे — जैसे भारत की राजनीति और शासन में महिलाओं की भागीदारी बढ़ रही है भारत के पास राजनीति में लैंगिक समानता के लिए एक शक्तिशाली उदाहरण स्थापित करने का अवसर है जो संभावित रूप से शासन व नीति निर्माण की प्रक्रिया को और बेहतर बना सकता हैं।

सन्दर्भ सूची :

१. गास्वामी, बी. : इण्डियन वूमेन इन पोलिटिक्स, अभिषेक पब्लिकेशन, नई दिल्ली, २०१७

2. Chief Electoral officer "Voting Parcentage in Various Lok sabha Election" govt. of Uttarakhand, 22 March 2024

३.नवभारत टाईम्स, २१ अक्टूबर १९९९, नई दिल्ली

४. चतुर्वेदी, इनाक्षी और अग्रवाल, सीमा : महिला नेतृत्व एवं राजनीतिक सहभागिता, आविश्कार प्रकाशन, जयपुर २०१३,

5. Praveen Rai "Electoral participation of women in India: key Determinants and Barries" Economic and politicalweekly.XVLI3:47-55 14 January 2011

6. State wise voter turnout in general Election 2014, Govt. of India (2014)

7. Tembheker, chittaranjan (8 march 2014) "E C to give photo voter Hips" The times of India. 28 march 2014

8. Rout, Akshay "Women's participation in the Electeral process" Election commission of India, Retrieved 22 March

9. Nussbaun, Martha c. "Sex, lanes and inconality What India can teach the united states (pdf). American Academy of Arts and sciences.Retrieved 27 March 2014.